25/2

1999
HINDI
Paper 2
(Literature)

Time : 3 Hours] *[Maximum Marks : 300*

INSTRUCTIONS

*Candidates should attempt question 1 which is compulsory and any **four** of the remaining questions selecting **two** from each Section.*

The number of marks carried by each question is indicated at the end of the question.

Answers must be written in Hindi.

1. अधोलिखित अवतरणों में से किन्हीं ***चार*** की मार्मिक व्याख्या कीजिए, साथ ही काव्यत्व-व्यंजक उपकरणों का उल्लेख भी कीजिए । *20×4=80*

(क) सतगुरु साँचा सूरिवाँ, सबद जु ब्राहमा एक ।
लागत ही में मिलि गया, पड़्या कलेजै छेक ।।
गुरु गोविंद तौ एक है, दूजा यहु आकार ।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार ।।
जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस, फुनि रसना नहीं राम ।
ते नर इस संसार में, उपजि भये बेकाम ।।
कबीर सीप समंद की, रटै पियासा पियास ।
समदहि तिणका बरि गिणै स्वाँति बूँद की आस ।।

(ख) निर्गुन कौन देश के बासी ?
मधुकर ? हँसि समुझाइ सौंह दै बूझति साँच न हाँसी ।।
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी ।
कैसो बरन भेस है कैसो केहि रस में अभिलासी ।।
पावैगो पुनि कियो आपनो जो रे कहैगो गाँसी ।
सुनत मौन है रह्यो ठग्यो-सो 'सूर' सबै मति नासी ।।

[Turn over

(ग) स्वारथ को साज न समाज परमारथ को,
मोसों दगाबाज दूसरो न जगजाल है ।
कै न आयों, करौं न करौंगो करतूति भली,
लिखी न बिरंचि हू भलाई भूलि भाल है ।।
रावरी सपथ, राम ? नाम ही की गति मेरे,
इहाँ झूठो झूठो सो तिलोक तिहूँ काल है ।
तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किए, कृपालु,
कीजै न बिलंब, बलि, पानी भरी खाल है ।।

(घ) तपस्वी ? क्यों इतने हो क्लांत ?
वेदना का यह कैसा वेग ?
आह ! तुम कितने अधिक हताश
बताओ यह कैसा उद्वेग ।।
हृदय में क्या है कहीं अधीर
लालसा जीवन की निश्शेष ?
कर रहा वंचित कहीं न त्याग
तुम्हें मन से धर सुंदर वेश ?
दुःख के डर से तुम अज्ञात
जटिलताओं का कर अनुमान;
काम से झिझक रहे हो आज,
भविष्यत् से बनकर अनजान ।।

(ङ) मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज, जो नहीं कही !
हो सकी कर्म पर वज्रपात यदि धर्म रहे नत सदा माथ
इस पथ पर मेरे कार्य सकल हों भ्रष्टशील के से शतदल !
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण कर, करता मैं तेरा तर्पण !

(च) यह अन्तिम जप, ध्यान में देखते चरण-युगल
राम ने बढ़ाया कर लेने को नील कमल;
कुछ लगा न हाथ, हुआ सहसा स्थिर मन चंचल,
ध्यान की भूमि से उतरे, खोले पलक विमल,
देखा यह रिक्त स्थान, यह जप का पूर्ण समय
आसन छोड़ना असिद्धि, भर गए नयन-द्वय; –
धिक् जो जीवन पाता ही आया है विरोध,
धिक् साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध ?

(ख) [illegible] ने प्रकाश की तरफ इशारा करके कहा — वह तुम्हारा लड़का है न ! देखो, कटोरे में [illegible] था, वह भी मिट्टी में मिल गया । कोई इस तरह दुखियों को सताता है ? सबके दिन एक से नहीं रहते । आदमी को घमंड न करना चाहिए ।

(ग) सब प्रकार के शासन में — चाहे धर्म-शासन हो, चाहे राज-शासन, या संप्रदाय-शासन — मनुष्य-जाति के भय और लोभ से पूरा काम लिया गया है । दण्ड का भय और अनुग्रह का लोभ दिखाते हुए राज-शासन तथा नरक का भय और स्वर्ग का लोभ दिखाते हुए धर्म-शासन और मत-शासन चलते आ रहे हैं ।

खण्ड A

2. कबीर की साखियों का विशेष संबंध लौकिक आचरणों से है तथा पदों का संबंध विशेषकर धार्मिक सिद्धांतों से है । — इस उक्ति पर अपने विचार तर्क और प्रमाण के साथ प्रस्तुत कीजिए । 55

3. स्पष्ट कीजिए कि भ्रमरगीत की शैली में सरसता और वाक्पटुता का अद्भुत सामंजस्य है । 55

4. "यह भाग कथा की दृष्टि से भले ही अवांछनीय हो परन्तु तुलसी के आत्म-चरित की दृष्टि से अवश्य श्लाघ्य है ।" — कवितावली के उत्तरकांड के संदर्भ में इस पर मीमांसा कीजिए । 55

5. 'कामायनी' के श्रद्धा सर्ग का विश्लेषण करते हुए उसका महत्त्व बताइए । 55

6. प्रकृति-चित्रण की दृष्टि से 'राम की शक्ति-पूजा' पर विचार कीजिए । 55

खण्ड B

7. सिद्ध कीजिए कि 'अंधेर नगरी' नाटक भ्रष्ट सरकारी शासनतंत्र पर गहरी चोट है । 55

8. 'गोदान' के आधार पर प्रेमचन्दकालीन सामाजिक दशा पर दृष्टिपात कीजिए । 55

9. "चन्द्रगुप्त नाटक में तत्कालीन इतिहास को राष्ट्रीयता के साँचे में ढाल दिया गया है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । 55

10. रामचन्द्र शुक्ल के निबन्धकार रूप की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 55

11. इस अभिमत पर टिप्पणी कीजिए कि 'शेखर' एक व्यक्ति का निजी दस्तावेज़ है और साथ ही उस व्यक्ति के युग-संघर्ष का प्रतिबिंब भी है । 55